# प्रदोषव्रत की विधि एवं महिमा

यह व्रत शिवजी की प्रसन्नता और प्रभुत्व की प्राप्ति के प्रयोजन से प्रत्येक मास के कृष्ण और शुक्ल दोनों पक्षों में त्रयोदशी को किया जाता है। शिव का पूजन और रात्रि-भोजन के अनुरोध से इसे प्रदोष कहते हैं।

**शिवपूजानक्तभोजनात्मकमकं प्रदोषम्।** (हेमाद्रि)

प्रदोष का समय सूर्यास्त से दो घड़ी रात बीतनेतक है। किसी-किसी के मत से तीन घड़ी रात बीतनेतक है। यथा-

**प्रदोषोऽस्तमयादूर्ध्वं घटिकाद्वयमिष्यते।** (माधव)

तथा-**प्रदोषोऽस्तमयादूर्ध्वं घटिकात्रयमिष्यते।** (गौड़ग्रन्थ)

जो मनुष्य प्रदोष के समय परमेश्वर शिव के चरण-कमल का अनन्य मन से आश्रय लेता है उसके धन-धान्य, स्त्री-पुत्र, बन्धु-बान्धव और सुख-सम्पत्ति सदैव बढ़ते रहते हैं।

**यो वै प्रदोषसमये परमेश्वरस्य कुर्वन्त्यनन्यमनसोऽङ्घ्रिसरोजसेवाम्।**
**नित्यं प्रवृद्धधनधान्यकलत्रपुत्रसौभाग्यसम्पदधिकास्त इहैव लोकाः।।**

(स्कन्दपुराण)

यदि कृष्ण पक्ष में सोम और शुक्ल पक्ष में शनि हो तो उस प्रदोष का विशेष फल होता है।

**यदा त्रयोदशी कृष्ण सोमवारेण संयुता।**
**यदा त्रयोदशी शुक्ला मन्दवारेण संयुता।।**
**तदातीव फलं प्राप्तं धनपुत्रादिकं लभेत्।** (हेमाद्रि)

कृष्ण-प्रदोष में प्रदोषव्यापिनी परविद्धा त्रयोदशी ली जाती है जबकि शुक्ल-प्रदोष में पूर्वविद्धा त्रयोदशी ली जाती है। कृष्ण पक्ष में प्रदोष व्यापिनी परविद्धा त्रयोदशी उपलब्ध न हो तो पूर्वविद्धा ही ग्राह्य है।

**शुक्लत्रयोदशी पूर्वा परा कृष्ण त्रयोदशी।** (माधव)
**यदा तु कृष्णपक्षे परविद्धा न लभ्यते तदा पूर्वविद्धा ग्राह्या।।** (वसिष्ठ)

प्रदोषव्रतवाले दिन दिनभर उपवास कर सूर्यास्त के समय से थोड़ा पहले पुनः स्नान करके शिवजी के समीप बैठकर उनका भक्तिसहित पूजन करे और सूर्यास्त से दो या तीन घड़ी रात्री व्यतीत होने से पहले ही भोजन करके शिवजी का स्मरण करे।

शिवमूर्ति की पूजा के लिये पूर्व या उत्तरमुख होकर बैठे और हाथ में जल, फल, पुष्प और गन्धाक्षत लेकर '**मम शिवप्रसादप्राप्तिकामनया प्रदोषव्रताङ्गीभूतं शिवपूजनं करिष्ये**'-यह संकल्प करके मस्तक पर भस्म का तिलक अथवा त्रिपुण्ड्र और गले में रुद्राक्ष की माला धारण करे।

उत्तम प्रकार के गन्ध, पुष्प और बिल्व-पत्रादि से उमा-महेश्वर का पद्धति के अनुसार पूजन करे। यदि साक्षात् शिवमूर्ति न प्राप्त हो सके तो पार्थिवलिंग का निर्माण कर उसकी पूजा करे। पार्थिवलिंग की संक्षिप्त विधि इस प्रकार है।[1] भीगी हुई चिकनी मिट्टी को '**हराय नमः**' से ग्रहण करके '**महेश्वराय नमः**' से कुक्कुटाण्ड अथवा हाथ के अँगूठे के प्रमाण की मूर्ति(लिंग) बनावे। फिर '**शूलपाणये नमः**' से प्रतिष्ठा और '**पिनाकपाणये नमः**' से आवाहन करके '**शिवाय नमः**' से स्नान कराये और '**पशुपतये नमः**' से गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य अर्पण करे। तत्पश्चात् '**जय नाथ कृपासिन्धो जय भक्तार्तिभञ्जन। जय दुस्तरसंसारसागरोत्तारण प्रभो।। प्रसीद मे महाभाग संसारार्तस्य खिद्यतः। सर्वपापक्षयं कृत्वा रक्ष मां परमेश्वर।।**' से प्रार्थना करके '**महादेवाय नमः**' से पूजित मूर्ति का विसर्जन करे।

**हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक्।**
**शिवः पशुपतिश्चैव महादेवेति पूजयेत्।।*** (शिवपूजा)

इस व्रत की पूर्ण अवधि 21 वर्ष है, परन्तु समय और सामर्थ्य न हो तो उद्यापन करके इसका विसर्जन करे। कृष्ण पक्ष एवं शुक्ल पक्ष दोनों त्रयोदशी को किये जानेवाले प्रदोषव्रत का विधान एक समान ही है। अलग-अलग दिनों में पड़नेवाली त्रयोदशी की अलग-अलग विशेषतायें हैं। उदाहरणार्थ संतान हेतु 'शनिप्रदोष', ऋण मोचन के लिये 'भौमप्रदोष', शान्ति-रक्षा के लिये 'सोमप्रदोष', आयु और आरोग्य की वृद्धि के लिये 'अर्कप्रदोष' उत्तम होता है।

शिवपूजन के उपरान्त निम्नलिखित प्रार्थना कर भोजन करना चाहिये।

**भवाय भवनाशाय महादेवाय धीमते।**
**रुद्राय नीलकण्ठाय शर्वाय शशिमौलिने।।**
**उग्रायोग्राघनाशाय भीमाय भयहारिणे।**
**ईशानाय नमस्तुभ्यं पशुनां पतये नमः।।**

परन्तु स्वयं भोजन करने से पहले ब्राह्मणों को भोजन एवं दक्षिणा से संतुष्ट कर लेना चाहिये। यद्यपि प्रदोषव्रत प्रत्येक त्रयोदशी को होता है तथापि कामनाभेद से इसमें यह विशेषता है कि-

**यदा त्रयोदशी शुक्ला मन्दवारेण संयुता।**
**आरब्धव्यं व्रतं तत्र संतानफलसिद्धये।।**
**ऋणप्रमोचनार्थं तु भौमवारेण संयुता।**
**सौभाग्यस्त्रीसमृद्ध्यर्थं शुक्रवारेण संयुता।।**

1. पार्थिवलिंग की पूजा-संबंधी जानकारी के लिये इसी पुस्तक में तत्संबंधी लेख को देखें।

* यही श्लोक शब्दों के मामूली अन्तर के साथ वीरमित्रोदयः पूजाप्रकाशः पृ. 201 पर भी पाया जाता है।

**आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थं भानुवारेण संयुता।।**

(मदनरत्न-निर्णयामृतान्तर्गतस्कन्दपुराणवचनानि)

अर्थात्-

1. यदि पुत्रप्राप्ति की कामना हो तो शुक्लपक्ष की जिस त्रयोदशी को शनिवार हो, उससे आरम्भ करके वर्षपर्यन्त या फल प्राप्त होनेतक व्रत करे।

2. ऋणमोचन की कामना हो तो जिस त्रयोदशी को भौमवार हो उससे आरम्भ करे।

3. सौभाग्य और स्त्री की समृद्धि की कामना हो तो जिस त्रयोदशी को शुक्रवार हो, उससे आरम्भ करे।

4. अभीष्ट-सिद्धि की कामना हो तो जिस त्रयोदशी को सोमवार हो, उससे आरम्भ करे और यदि

5. आयु, आरोग्यादि की कामना हो तो जिस त्रयोदशी को रविवार हो, उससे आरंभ करके प्रत्येक शुक्ल-कृष्ण त्रयोदशी को एक वर्षतक करे।

पुत्रादि की प्राप्ति के लिये किये जानेवाले प्रदोषव्रत में प्रातः स्नानादि करके '**मम पुत्रादिप्राप्तिकामनया प्रदोषव्रतमहं करिष्ये**' यह संकल्प करके सूर्यास्त के समय पुनः स्नान करे और शिवजी के समीप बैठकर वेदपाठी ब्राह्मण के आज्ञानुसार उपर्युक्त '**भवाय भवनाशाय०**' मन्त्र से प्रार्थना करके षोडशोपचार से पूजन करे। नैवेद्य में सेके हुए जौ का सत्तू, घी और शक्कर का भोग लगावे। इसके बाद वहीं आठों दिशाओं में आठ दीपक रखकर प्रत्येक के स्थापन में आठ बार नमस्कार करे। इसके बाद निम्न मन्त्र से वृष(नन्दीश्वर) को जल और दूर्वा खिला-पिलाकर उसका पूजन करे।

**धर्मस्त्वं वृषरूपेण जगदानन्दकारक।**
**अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतः पाहि सनातन।।**

तदनन्तर उसको स्पर्श करके निम्न मन्त्र से शिव, पार्वती एवं नन्दिकेश्वर की प्रार्थना करे।

**ऋणरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः।**
**भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।**
**पृथिव्यां यानि तीर्थानि सागरान्तानि यानि च।**
**अण्डमाश्रित्य तिष्ठन्ति प्रदोषे गोवृषस्य तु।।**
**स्पृष्ट्वा तु वृषणौ तस्य श्रृंगमध्ये विलोक्य च।**
**पुच्छं च ककुदं चैव सर्वपापैः प्रमुच्यते।।**

(मदनरत्न-निर्णयामृतान्तर्गतस्कन्दपुराणवचनानि)

यह व्रत विशेषकर स्त्रियों के करने का है[1] और वृष के पुच्छ और शृंग आदि के स्पर्श करने से अभीष्टसिद्धि होती है। प्रदोष-समय में शिवजी के समीप यक्ष, गन्धर्व, पतग(पक्षी), उरग, सिद्ध, साध्य, विद्याधर, देव, अप्सरा और भूतगण उपस्थित रहते हैं, अतः उस समय के शिवपूजन से सारे मनोरथों की सिद्धि होती है।

**गन्धर्वयक्षपतगोरगसिद्धसाध्यविद्याधरामरवराप्सरसां गणाश्च।**
**ये अन्ये त्रिलोकनिलयाः सहभूतवर्गाः प्राप्ते प्रदोषसमये हरपार्श्वसंस्था।।**
**तस्मात्प्रदोषे शिव एक एव पूज्यः।।**

(स्कंदपुराण ब्राह्मखंड-ब्राह्मोत्तरखण्ड)

श्रावण में सोम-प्रदोष विशेष फल देनेवाला माना जाता है। उस दिन ग्राम से बाहर किसी पुष्पोद्यान के शिवमन्दिर में जाकर शिव-पूजन करना चाहिये। प्रदोष के दिन लाल कनेर के फूल, लाल चन्दन और धूप-दीपादि से शिव-पूजन विशेष फलदायी होता है।

(व्रतपरिचय द्वारा पं. हनुमान् शर्मा, गीताप्रेस, गोरखपुर)*

## (1) व्रत की विस्तृत विधि एवं महिमा

त्रयोदशी तिथि में सायंकाल प्रदोष कहा गया है। प्रदोष के समय महादेवजी कैलास पर्वत के रजत-भवन में नृत्य करते हैं और देवता उनके गुणों का स्तवन करते हैं। अतः धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की इच्छा रखनेवाले पुरुषों को प्रदोष में नियमपूर्वक भगवान् शिव की पूजा, होम, कथा और गुणगान करने चाहिये। दरिद्रता के तिमिर से अन्धे और भवसागर में डूबे हुए संसारभय से भीरु मनुष्यों के लिये यह प्रदोषव्रत पार लगानेवाली नौका है, भगवान् शिव की पूजा करने से मनुष्य दरिद्रता, मृत्यु-दुःख और पर्वत के समान भारी ऋण-भार को शीघ्र ही दूर करके सम्पत्तियों से पूजित होता है। जो प्रदोषकाल में अनन्यचित्त होकर परमेश्वर के चरणारविन्दों की पूजा करते हैं, वे इसी संसार में सदा बढ़नेवाले धन-धान्य, स्त्री-पुत्र, सौभाग्य और सम्पत्ति के द्वारा सबसे बढ़कर होते हैं।

पूर्वकाल में एक निर्धन पुत्रवती ब्राह्मणी शाण्डिल्य महर्षि से यह सुनकर, कि उसका पुत्र पूर्वजन्म में उत्तम ब्राह्मण था परन्तु उसने यज्ञादि सत्कर्म न कर सारी आयु केवल दान लेने में बितायी थी फलस्वरूप उसे वर्तमान में दरिद्रता प्राप्त हुई है, अपने पुत्र के दोष के निवारणार्थ उपाय पूछा। शाण्डिल्य ने उसे भगवान् शंकर की शरण लेने को कहा। तब साध्वी ब्राह्मणी ने शाण्डिल्य मुनि को

1. स्त्रियों को विशेष रूप से इसलिये करना चाहिये कि इससे सुहागिन स्त्रियों के सौभाग्य में वृद्धि होती है तथा विधवाओं को धर्म की प्राप्ति होती है। इस व्रत को पुरुष भी कर सकते हैं। विद्यार्थियों को इससे विद्या की प्राप्ति होती है।

* उपर्युक्त लेख के सभी उद्धरण (जो अपूर्णरूप से दिये गये हैं) इसी पुस्तक से लिये गये हैं। इस पुस्तक में दिये गये उद्धरण भी अपूर्ण ही हैं।

प्रणाम करके शिवपूजन की विधि का क्रम पूछा।

शाण्डिल्य बोले – दोनों पक्षों की त्रयोदशी को मनुष्य निराहार रहे, तथा सूर्यास्त से तीन घड़ी पहले स्नान करे। फिर श्वेत वस्त्र धारण करके धीर पुरुष सन्ध्या और जप आदि नित्यकर्म की विधि पूरी करके मौन हो शास्त्रविधि का पालन करते हुए भगवान् शिव की पूजा प्रारम्भ करे। भगवद्विग्रह के आगे की भूमि को नये निकाले हुए शुद्ध जल से भलीभाँति लीप – पोतकर सुन्दर मण्डल बनावे। धौत – वस्त्र आदि के द्वारा उस मण्डल को सब ओर से घेर दे। ऊपर से चँदोवा आदि लगाकर फल – फूल और नवीन अङ्कुरों से उसको सजावे। मण्डल के मध्य की भूमि में पाँच रंगों से युक्त विचित्र कमल अङ्कित करके उसी पर सुस्थिर एवं उत्तम आसन बिछाकर बैठे और हृदय में भक्तिभाव से युक्त हो पूजा की सब सामग्री एकत्र करे। फिर पवित्र भाव से शास्त्रोक्त मन्त्र द्वारा देवपीठ को आमन्त्रित करे। तत्पश्चात् क्रमशः आत्मशुद्धि और भूतशुद्धि[1] आदि करके तीन प्राणायाम करे। उसके बाद बिन्दुयुक्त बीजाक्षरों के द्वारा विधिपूर्वक मातृकान्यास[2] करे। तदनन्तर परा देवता का ध्यान करके मातृकान्यास की विधि पूरी करे। फिर परम शिव का ध्यान करके पीठ[3] के बाम भाग में गुरु को प्रणाम करे, दक्षिण भाग में गणेशजी को मस्तक झुकावे, दोनों अंशों(कन्धों) और ऊरुओं में धर्म आदि(धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा ऐश्वर्य) का न्यास करे। नाभि तथा पार्श्वभागों में अधर्म(अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य और अनैश्वर्य) आदि का न्यास करे। तत्पश्चात् हृदय में अनन्त आदि का न्यास करके देवपीठ पर मन्त्र का न्यास करे। आधारशक्ति से लेकर ज्ञानात्मातक का क्रमशः न्यास करके हृदय में एक कमल की भलीभाँति भावना करे। वह कमल नौ शक्तियों से युक्त एवं परम सुन्दर हो। उसी कमल की कर्णिका में कोटि – कोटि चन्द्रमाओं के समान प्रकाशमान उमापति भगवान् शिव का ध्यान करे।

भगवान् के तीन नेत्र हैं। मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट शोभा पाता है। जटाजूट कुछ – कुछ पीला हो गया है। उसपर रत्नजटित किरीट सुशोभित है। उनके कण्ठ में नील चिन्ह है और अंग – अंग से उदारता सूचित होती है। सर्पों के हार से उनकी बड़ी शोभा हो रही है। उनके एक हाथ में वरद और दूसरे में अभय की मुद्रा है। वे फरसा धारण करते हैं। उन्होंने नागों का कङ्कण, केयूर, अङ्गद तथा मुद्रिका धारण कर रक्खी है। वे व्याघ्रचर्म पहने हुए रत्नमय सिंहासन पर विराजमान हैं। उनके वाम भाग में गिरिराजनन्दिनी उमादेवी का चिन्तन करे।

इस प्रकार महादेवजी तथा गिरिजादेवी का ध्यान करके क्रमशः गन्ध आदि से उनकी मानसिक पूजा करे। पाँच वैदिक मन्त्रों से गन्ध आदि द्वारा पूर्वोक्त पाँच स्थानों (कंधों, ऊरुओं या जाँघों, नाभि, पार्श्वभागों तथा हृदय) में अथवा हृदय में पूजा करे। फिर मूलमन्त्र (जैसे ॐ **नमः शिवाय**) से तीन

1, 2, 3, – भूतशुद्धि, मातृकान्यास और पीठन्यास जिनका यहाँ संकेत किया गया है, उनकी जानकारी के लिये 'भूतशुद्धि' तथा 'न्यास का स्वरूप एवं प्रयोग' शीर्षकवाले अध्यायों को पढ़ें।

बार हृदय में ही पुष्पांजलि दे। उसके बाद बाह्यपीठ(सिंहासन) पर महादेवजी का पुनः पूजन प्रारम्भ करे। पूजा के आरम्भ में एकाग्रचित्त होकर संकल्प पढ़े। तदनन्तर हाथ जोड़कर मन-ही-मन भगवान् शिव का ध्यान एवं आवाहन करे-'हे भगवान् शंकर! आप ऋण, पातक, दुर्भाग्य और दरिद्रता आदि की निवृत्ति के लिये तथा सम्पूर्ण पापों का नाश करने के लिये मुझपर प्रसन्न होइये। मैं दुःख और शोक की आग में जल रहा हूँ, संसारभय से पीड़ित हूँ, अनेक प्रकार के रोगों से व्याकुल और दीन हूँ, वृषवाहन! मेरी रक्षा कीजिये। देवदेवेश्वर! सबको निर्भय कर देनेवाले महादेवजी! आप यहाँ पधारिये और मेरी की हुई इस पूजा को पार्वतीजी के साथ ग्रहण कीजिये।' इस प्रकार संकल्प और आवाहन करके पूजा आरम्भ करनी चाहिये। तत्पश्चात् मनुष्य एकाग्रचित्त हो रुद्रसूक्त का पाठ करते हुए वहाँ स्थापित किये हुए शङ्ख के जल से और पञ्चामृत से महादेवजी का अभिषेक करके भाँति-भाँति के मन्त्रों से आसन आदि उपचारों को समर्पित करे। भावनाद्वारा दिव्य वस्त्रों से विभूषित स्वर्णसिंहासन की कल्पना करे और उसी पर भगवान् को विराजमान करके अष्टगुणयुक्त अर्घ्य और पाद्य निवेदन करे। फिर शुद्ध जल से आचमन कराकर मधुपर्क दे। उसके बाद पुनः आचमन के लिये जल देकर मन्त्रोच्चारणपूर्वक स्नान करावे। फिर यज्ञोपवीत, वस्त्र और आभूषण अर्पण करे। परम पवित्र अष्टाङ्गयुक्त चन्दन चढ़ावे। बिल्व, मदार, लाल कमल, धतूर, कनेर, सनई का फूल, चमेली, कुशा, अपामार्ग, तुलसी, जूही, चम्पा, भटकटइया और करवीर के फूलों में से जितने मिल जायँ, उन सबको शिवोपासक भगवान् शिव पर चढ़ावे। इनके अतिरिक्त भी नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्प निवेदन करे। तत्पश्चात् लाल चन्दन से उत्पन्न धूप और निर्मल दीप समर्पित करे। उसके बाद हाथ धोकर घी, नमकीन और साग, मिठाई, पूआ, शक्कर तथा गुड़ के बने हुए पदार्थ एवं खीर का नैवेद्य भोग लगावे। मधु, दही और जल भी अर्पण करे। उस खीर का ही मन्त्र द्वारा प्रज्वलित की हुई अग्नि में हवन करे। यह होम शास्त्रोक्तविधि से आचार्य के कथनानुसार सम्पन्न करना चाहिये। भगवान् शंकर को नैवेद्य देकर मुखशुद्धि के लिये उत्तम ताम्बूल अर्पण करे। धूप, आरती, सुन्दर छत्र, उत्तम दर्पण को (अपने अधिकार के अनुसार) वैदिक-तान्त्रिक मन्त्रों द्वारा विधिपूर्वक समर्पित करे। यदि यह सब करने की अपने में शक्ति न हो, अधिक धन का अभाव हो, तो अपने पास जितना धन हो, उसी के अनुसार भगवान् की पूजा करे। गौरीपति भगवान् शंकर भक्तिपूर्वक भेंट किये हुए पुष्पमात्र से भी संतुष्ट को जाते हैं। तदनन्तर स्तोत्रों द्वारा स्तुति करके भगवान् को साष्टाङ्ग प्रणाम करे। फिर परिक्रमा करके पूजा समर्पित करने के पश्चात् विधिपूर्वक श्रीगिरिजापति की इस प्रकार प्रार्थना करे-

'देव! जगन्नाथ! आपकी जय हो। सनातन शंकर! आपकी जय हो। सम्पूर्ण देवताओं के अधीश्वर! आपकी जय हो। सर्वदेवपूजित! आपकी जय हो। सर्वगुणातीत! आपकी जय हो। सबको वर देनेवाले प्रभो! आपकी जय हो। नित्य, आधाररहित, अविनाशी विश्वम्भर! आपकी जय हो, जय हो। सम्पूर्ण विश्व के लिये एकमात्र जानने योग्य महेश्वर! आपकी जय हो। नागराज वासुकिको आभूषण

के रूप में धारण करनेवाले प्रभो! आपकी जय हो। गौरीपते! आपकी जय हो! चन्द्रार्धशेखर शम्भो! आपकी जय हो। कोटि सूर्यों के समान तेजस्वी शिव! आपकी जय हो। अनन्त गुणों के आश्रय! आपकी जय हो। भयंकर नेत्रोंवाले रुद्र! आपकी जय हो। अचिन्त्य! निरञ्जन! आपकी जय हो। नाथ! दयासिन्धो! आपकी जय हो। भक्तों की पीड़ा का नाश करनेवाले प्रभो! आपकी जय हो। दुस्तर संसारसागर से पार उतारनेवाले परमेश्वर! आपकी जय हो। महादेव! मैं संसार के दुःखों से पीड़ित एवं खिन्न हूँ, मुझपर प्रसन्न होइये। परमेश्वर! समस्त पापों के भय का अपहरण करके मेरी रक्षा कीजिये। मैं महान् दारिद्र्य के समुद्र में डूबा हुआ हूँ। बड़े-बड़े पापों ने मुझे आक्रान्त कर लिया है। मैं महान् शोक से नष्ट और बड़े-बड़े रोगों से व्याकुल हूँ। सब ओर से ऋण के भार से लदा हुआ हूँ। पापकर्मों की आग में जल रहा हूँ और ग्रहों से पीड़ित हो रहा हूँ। शंकर! मुझपर प्रसन्न होइये।[1]

निर्धन मनुष्य इस प्रकार पूजा के अन्त में भगवान् गिरिजापति की प्रार्थना करे। धनाढ्य अथवा राजा को इस प्रकार भगवान् शंकर की प्रार्थना करनी चाहिये-'हे शंकरजी! आपके प्रसाद से मेरे को सदा आनन्द रहे। मेरे राज्य में लुटेरे न रहें, सब लोग निरापद होकर रहें। पृथ्वी पर अकाल, महामारी आदि के सन्ताप शान्त हो जायँ। सबकी खेती धन-धान्य से समृद्ध हो। सम्पूर्ण दिशाओं में सुख का साम्राज्य छा जाय।' इस प्रकार प्रदोषव्रत के दिन गिरिजापति भगवान् शंकर की आराधना करे, ब्राह्मणों को भोजन करावे और उन्हें दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करे। इस प्रकार मैंने सब पापों का नाश, सब प्रकार की दरिद्रता का निवारण तथा समस्त मनोवाञ्छित वस्तुओं का दान करनेवाली शिवपूजा का वर्णन किया। यह शिव की पूजा शिवजी के द्रव्य का हरण करने के पाप को छोड़कर शेष सभी महापातकों और उपपातकों के महान् समुदाय का नाश करती है।

शाण्डिल्य मुनि की बातें सुनकर ब्राह्मणी के दोनों बालक (जिनमें से एक ब्राह्मणी द्वारा पाला गया राजा का पुत्र था) उनके उपदेशानुसार प्रत्येक प्रदोष-व्रत के दिन शिव की आराधना करने लगे। इस प्रकार शिवपूजा करते हुए चार महीने सुखपूर्वक बीत गये। एक दिन द्विजकुमार अपने भाई (राजकुमार)

---

1. **जय देव जगन्नाथ जय शङ्कर शाश्वत। जय सर्वसुराध्यक्ष जय सर्वसुरार्चित।।**
**जय सर्वगुणातीत जय सर्ववरप्रद। जय नित्य निराधार जय विश्वम्भराव्यय।।**
**जय विश्वैकवेद्येश जय नागेन्द्रभूषण। जय गौरीपते शम्भो जय चन्द्रार्धशेखर।।**
**जय कोट्यर्कसंकाश जयानन्तगुणाश्रय। जय रुद्र विरूपाक्ष जयाचिन्त्य निरञ्जन।।**
**जय नाथ कृपासिन्धो जय भक्तार्तिभञ्जन। जय दुस्तरसंसारसागरोत्तारण प्रभो।।**
**प्रसीद मे महादेव संसारार्तस्य खिद्यतः। सर्वपापभयं हृत्वा रक्ष मां परमेश्वर।।**
**महादारिद्र्यमग्नस्य महापापहतस्य च। महाशोकविनष्टस्य महारोगातुरस्य च।।**
**ऋणभारपरीतस्य दह्यमानस्य कर्मभिः। ग्रहैः प्रपीड्यमानस्य प्रसीद मम शङ्कर।।**
(संक्षिप्त स्कन्दपुराणांक-ब्राह्मखण्ड-ब्रह्मोत्तरखण्ड-7/59-66)

को साथ लिये बिना ही नदी के तट पर स्नान करने के लिये गया और वहाँ मौज से देरतक इधर-उधर घूमता रहा। वहाँ झरने के जल के आघात से खाई की भूमि कट जाने से उसमें गड़ा हुआ एक बड़ा भारी खजाने का कलश चमक रहा था, जिसपर ब्राह्मणकुमार की नजर पड़ी। उस धन को वह अपने माता के पास लाकर दिखलाया। ब्राह्मणी ने राजकुमार को भी बुलाकर कहा 'पुत्रों! इस खजाने को आपस में बराबर-बराबर बाँट लो।' किन्तु राजकुमार ने खजाने में से हिस्सा लेना अस्वीकार कर दिया। उसने कहा कि जब भगवान् शंकर ने भाई पर कृपा की है तो वे मुझपर भी करेंगे।

इस प्रकार भगवान् शंकर की पूजा करते हुए उन दोनों कुमारों का एक वर्ष बीत गया। एक दिन राजकुमार अपने भाई के साथ वन में भ्रमण करने के लिये गया। कुछ दूर जाने पर उन्होंने सैकड़ों गन्धर्वकन्याओं को परस्पर क्रीड़ा करते हुए देखा। उन्हें देख राजकुमार के भाई ने कहा कि यहाँ से आगे जाना उचित नहीं है; क्योंकि उधर स्त्रियाँ विहार कर रही हैं। ऐसा कहकर वह लौट पड़ा और दूर जाकर खड़ा हो गया। किन्तु राजकुमार अकेला ही निर्भय होकर स्त्रियों की उस क्रीड़ास्थली की ओर चला गया। उन गन्धर्व-कन्याओं में से एक ने राजकुमार को आते देख मन-ही-मन कुछ विचार किया और सखियों से कहा तुम लोग यहाँ से जाकर समीपस्थ वन से चम्पा और अशोक आदि वृक्षों के फूल संग्रह करके पुनः यहीं लौट आना तबतक मैं यहीं बैठी हूँ। गन्धर्वकन्या राजकुमार पर दृष्टि लगाये वहीं खड़ी रही। उसने अपने पास आये हुए राजकुमार को आसन देकर उससे पूछा- "तुम कौन हो? किस देश से यहाँ आये हो? और किसके पुत्र हो?" इस प्रकार पूछने पर राजकुमार ने अपना परिचय बतलाया- "मैं विदर्भराज का पुत्र हूँ। मेरे माता-पिता बचपन में ही मर गये हैं। शत्रुओं ने मेरे राज्य पर अधिकार जमा लिया है और मैं दूसरे के राज्य में(ब्राह्मणी के धर्म-पुत्र के रूप में) गुजारा कर रहा हूँ।" तदनन्तर उसने गन्धर्वकन्या से उसका परिचय पूछा। परिचय के उपरान्त दोनों परस्पर आसक्त हो गये। गन्धर्वकुमारी ने अपने गले से मोती का हार निकालकर प्रेमपूर्वक राजकुमार को भेट किया। दो दिन बाद कन्या ने राजकुमार को पुनः उसी स्थान पर आने को कहा।

पूर्व निश्चित समय आने पर उस राजकुमार ने नियत स्थान पर पहुँचकर देखा-गन्धर्वराज और उनकी कन्या दोनों उपस्थित हैं। गन्धर्वराज ने राजकुमार से कहना शुरू किया- "विदर्भराजकुमार! मैं कल कैलास पर्वत पर गया था। देवेश्वर शिव ने मुझे बुलाकर सब देवताओं के समीप इस प्रकार कहा-'पृथ्वीतल पर धर्मगुप्त नाम से प्रसिद्ध एक राजकुमार है, जो इस समय अकिंचन है। उसका राज्य छिन गया है, शत्रुओं ने उसके देश को अपने अधिकार में कर लिया है। वह बालक सदा मेरी आराधना में लगा रहता है। उसी के प्रभाव से आज उसके समस्त पितर मेरे स्वरूप को प्राप्त हो गये हैं। गन्धर्वराज! तुम भी उस राजकुमार की सहायता करो। अब वह शत्रुओं को मारकर अपने राज्य को प्राप्त कर लेगा।' महादेवजी के इस प्रकार आज्ञा देने पर मैं अपने घर को आया। यहाँ मेरी इस कन्या ने भी तुम्हारें लिये बहुत प्रार्थना की। यह सब दयालु भगवान् शिव की प्रेरणा से ही हो रहा है, ऐसा

समझकर मैं इस कन्या को साथ लेकर आया हूँ। अतः मैं इसे तुम्हें पत्नीरूप में देता हूँ और भगवान् शिव की आज्ञा से शत्रुओं को मारकर तुम्हें तुम्हारे राज्य पर बिठाऊँगा। तुम दस हजार वर्षोंतक सुख भोगकर अन्त में शिवजी के लोक में जाओगे और वहाँ भी मेरी यह कन्या तुम्हारी ही सेवा में प्रस्तुत रहेगी।"

इस प्रकार कहकर गन्धर्वराज ने उसी वन में राजकुमार के साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया और दहेज में विपुल सम्पत्ति के साथ-साथ अस्त्र-शस्त्र, तथा रथ, हाथी एवं घोड़े आदि दिये। धर्मगुप्त गंधर्वों की सेना के साथ अपने नगर को गये और शत्रुओं से अपना राज्य छीनकर स्वयं राज्य करने लगे। जिस ब्राह्मणी ने उसका पुत्रवत् पालन किया था वही उसकी माता हुई। वह द्विजकुमार ही भाई हुआ तथा गंधर्वराज की पुत्री अंशुमति महारानी हुई, इस प्रकार शिवाराधन से धर्मगुप्त ने राज्य प्राप्त किया। इसी प्रकार दूसरे लोग भी प्रदोषव्रत के दिन शिवजी की आराधना से मनोवांछित फलप्राप्त करते हैं तथा अन्त में परमगति को प्राप्त करते हैं।

जो प्रदोषव्रत के माहात्म्य को उस दिन शिवपूजन के बाद सुनता एवं पढ़ता है उसे सौ जन्मोंतक दरिद्रता नहीं होती और अन्त में वह ज्ञानयुक्त हो शंकरजी के परमधाम को प्राप्त करता है।

(संक्षिप्त स्कंदपुराणांक, ब्राह्मखं., ब्राह्मो. खं. अ. 7)

## (2) प्रदोषव्रत (शुक्लपक्ष की शनी) – विधि एवं महिमा (क्रमशः)

जिस समय महातेजस्वी वृत्रासुर इन्द्र के समीप आया तब वृत्रासुर को देखकर सब देवता और मनुष्य महान् भय से युक्त हो पृथ्वी पर गिर पड़े। तब प्रतापी इन्द्र हाथ में वज्र लिये ऐरावत हाथी पर आरूढ़ हुए। सब देवता प्रतापी लोकपालों के साथ युद्ध के लिये एकत्र हो गये, परंतु वृत्रासुर को देखते ही सब लोकपाल अपने स्वामी इन्द्रसहित भयभीत हो गये। अतः वे भगवान् शिव की शरण में गये। महेन्द्र विजय के इच्छुक थे। अतः उन्होंने गुरु बृहस्पति के बताये अनुसार बड़े विश्वास के साथ तत्काल ही विधिपूर्वक शिवलिंग का पूजन किया। फिर उदार बुद्धिवाले बृहस्पतिजी इन्द्र से इस प्रकार बोले- "देवराज! कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में शनिवार के दिन यदि पूरी त्रयोदशी मिले तो यह समझना चाहिये कि मुझे सब कुछ प्राप्त हो गया।" उस दिन प्रदोषकाल में सब कामनाओं की सिद्धि के लिये लिंगरूपधारी भगवान् सदाशिव का पूजन करना चाहिये। दोपहर के समय स्नान करके तिल और आँवले के साथ गन्ध, पुष्प और फल आदि के द्वारा शिवजी की पूजा करे। फिर प्रदोषकाल में स्थावर लिंग का पूजन करे। गाँव से बाहर जो शिवलिंग स्थित है, उसके पूजन का फल ग्राम की अपेक्षा सौगुना अधिक है। उससे भी सौगुना अधिक माहात्म्य उस शिवलिंग के पूजन का है, जो वन में स्थित हो। वन की अपेक्षा भी सौगुना पुण्य पर्वत पर स्थित शिवलिंग के पूजन का है। पर्वतीय शिवलिंग की अपेक्षा तपोवन में स्थित शिवलिंग के पूजन का फल दस हजारगुना अधिक है। वह महान् फलदायक है। अतः विद्वानों को इस विभाग के अनुसार शिवलिंग का पूजन करना चाहिये और तड़ाग आदि तीर्थों में

विधिवत् स्नान आदि करना चाहिये। मिट्टी के पाँच पिण्ड निकाले बिना किसी बावड़ी में स्नान करना शुभकारक नहीं है। कुएँ में से अपने हाथ से जल निकालकर स्नान नहीं करना चाहिये(रस्सी आदि की सहायता से किसी पात्र में जल निकालकर ही स्नान करना चाहिये)। पोखरे में से मिट्टी के दस पिण्ड निकालकर ही स्नान करना चाहिये। नदी में स्नान करना सबसे उत्तम है। सब तीर्थों में गंगा का स्नान सर्वोत्तम है।

प्रदोषकाल में स्नान करके मौन रहना चाहिये। भगवान् सदाशिव के समीप एक हजार दीपक जलाकर प्रकाश करना चाहिये। इतना सम्भव न हो तो सौ अथवा बत्तीस दीपों से भी भगवान् के समीप प्रकाश किया जा सकता है। शिव की प्रसन्नता के लिये घी से दीपक जलाना चाहिये। इसी प्रकार फल, धूप, नैवेद्य, गन्ध और पुष्प आदि षोडश उपचारों से लिंगरूपी भगवान् सदाशिव की प्रदोषकाल में पूजा करनी चाहिये। वे भगवान् सम्पूर्ण मनोरथों को सिद्ध करनेवाले हैं। यदि जलहरी का जल न उलाँघना पड़े तो पूजन के पश्चात् भगवान् शिव की एक सौ आठ परिक्रमा करनी चाहिये। फिर यत्नपूर्वक एक सौ आठ बार ही नमस्कार भी करने चाहिये। इस प्रकार परिक्रमा और नमस्कार से भगवान् सदाशिव को, प्रसन्न करना उचित है। तत्पश्चात् निम्नलिखित सौ नामों से विधिपूर्वक भगवान् रुद्र की स्तुति करनी चाहिये।

रुद्र, नील, भीम और परमात्मा को नमस्कार है। कपर्दी(जटाजूटधारी), सुरेश्वर(देवताओं के स्वामी) तथा आकाशरूप केशवाले श्रीव्योमकेश को नमस्कार है। जो अपनी ध्वजा में वृषभ का चिह्न धारण करने के कारण वृषभध्वज हैं, उमा के साथ विराजमान होने से सोम हैं, चन्द्रमा के भी रक्षक होने से सोमनाथ हैं, उन भगवान् शम्भु को नमस्कार है। सम्पूर्ण दिशाओं को वस्त्ररूप में धारण करने के कारण जो दिगम्बर कहलाते हैं, भजनीय तेजस्वरूप होने से जिनका नाम भर्ग है, उन उमाकान्त को नमस्कार है। जो तपोमय, भव्य(कल्याणरूप), शिवश्रेष्ठ, विष्णुरूप, व्यालप्रिय(सर्पों को प्रिय माननेवाले), व्याल(सर्पस्वरूप) तथा सर्पों के पालक हैं उन भगवान् को नमस्कार है। जो महीधर(पृथ्वी को धारण करनेवाले), व्याघ्र(विशेष रूप से सूँघनेवाले), पशुपति(जीवों के पालक), त्रिपुरनाशक, सिंहस्वरूप, शार्दूलरूप और यज्ञमय हैं, उन भगवान् शिव को नमस्कार है। जो मत्स्यरूप, मत्स्यों के स्वामी, सिद्ध तथा परमेष्ठी हैं, जिन्होंने कामदेव का नाश किया है, जो ज्ञानस्वरूप तथा बुद्धि-वृत्तियों के स्वामी हैं, उनको नमस्कार है। जो कपोत(ब्रह्माजी जिनके पुत्र हैं), विशिष्ट(सर्वश्रेष्ठ), शिष्ट(साधुपुरुष) तथा सर्वात्मा हैं, उन्हें नमस्कार है। जो वेदस्वरूप, वेद को जीवन देनेवाले तथा वेदों में छिपे हुए गूढ़ तत्त्व हैं, उनको नमस्कार है। जो दीर्घ, दीर्घरूप, दीर्घार्थस्वरूप तथा अविनाशी हैं, जिनमें ही सम्पूर्ण जगत् की स्थिति है तथा जो सर्वव्यापी व्योमरूप हैं, उन्हें नमस्कार है। जो गजासुर के महान् काल हैं, जिन्होंने अन्धकासुर का विनाश किया है, जो नील, लोहित और शुक्लरूप हैं तथा चण्ड-मुण्ड नामक पार्षद जिन्हें विशेष प्रिय हैं, उन भगवान् शिव को नमस्कार है। जिनको भक्ति प्रिय है, जो द्युतिमान् देवता हैं, ज्ञाता और ज्ञान हैं, जिनके स्वरूप में कभी कोई विकार नहीं होता, जो महेश, महादेव तथा

हर नाम से प्रसिद्ध हैं, उनको नमस्कार है। जिनके तीन नेत्र हैं, तीनों वेद और वेदाङ्ग जिनके स्वरूप हैं, उन भगवान् शंकर को नमस्कार है। नमस्कार है। जो अर्थ(धन), अर्थरूप(काम) तथा परमार्थ(मोक्षरूप) हैं, उन भगवान् को नमस्कार है। जो सम्पूर्ण विश्व की भूमि के पालक, विश्वरूप, विश्वनाथ, शंकर, काल तथा कालावयवरूप हैं, उन्हें नमस्कार है। जो रूपहीन, विकृत रूपवाले तथा सूक्ष्म से भी सूक्ष्म हैं, उनको नमस्कार है। जो श्मशानभूमि में निवास करनेवाले तथा व्याघ्रचर्ममय वस्त्र धारण करनेवाले हैं, उनको नमस्कार है। जो ईश्वर होकर भी भयानक भूमि में शयन करते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर को नमस्कार है। जो दुर्गम हैं, जिनका पार पाना अत्यन्त कठिन है तथा जो दुर्गम अवयवों के साक्षी अथवा दुर्गारूपा पार्वती के सब अंगों का दर्शन करनेवाले हैं, उन भगवान् शिव को नमस्कार है। जो लिंगरूप, लिंग(कारण) तथा कारणों के भी अधिपति हैं उन्हें नमस्कार है। महाप्रलयरूप रुद्र को नमस्कार है। प्रणव के अर्थभूत ब्रह्मरूप शिव को नमस्कार है। जो कारणों के भी कारण, मृत्युञ्जय तथा स्वयम्भूरूप हैं, उन्हें नमस्कार है। हे श्रीत्र्यम्बक! हे नीलकण्ठ! हे शर्व! हे गौरीपते! आप सम्पूर्ण मंगलों के हेतु हैं; आपको नमस्कार है।[1]

प्रदोष-व्रत करनेवाले को महादेवजी के इन सौ नामों का पाठ अवश्य करना चाहिये। महामते इन्द्र! इस प्रकार तुमसे मैंने शिव-प्रदोष-व्रत की विधि बतलायी है। महाभाग! शीघ्रतापूर्वक इस व्रत का पालन करो। तत्पश्चात् युद्ध करना। भगवान् शिव की कृपा से तुम्हें विजय आदि सब कुछ प्राप्त होगा।

ब्रह्माजी कहते हैं कि एक समय की बात है, राजा चित्ररथ विमान पर बैठकर नाना प्रकार के द्वीपों का दर्शन करते हुए भगवान् शंकर के निवास-स्थान कैलास पर्वत पर गया। वहाँ उसने परम

1. **नमो रुद्राय नीलाय भीमाय परमात्मने। कपर्दिने सुरेशाय व्योमकेशाय वै नमः।।**
**वृषभध्वजाय सोमाय सोमनाथाय शम्भवे। दिगम्बराय भर्गाय उमाकान्ताय वै नमः।।**
**तपोमयाय भव्याय शिवश्रेष्ठाय विष्णवे। व्यालप्रियाय व्यालाय व्यालानां पतये नमः।।**
**महीधराय व्याघ्राय पशूनां पतये नमः। पुरान्तकाय सिंहाय शार्दूलाय मखाय च।।**
**मीनाय मीननाथाय सिद्धाय परमेष्ठिने। कामान्तकाय बुद्धाय बुद्धीनां पतये नमः।।**
**कपोताय विशिष्टाय शिष्टाय सकलात्मने। वेदाय वेदजीवाय वेदगुह्याय वै नमः।।**
**दीर्घाय दीर्घरूपाय दीर्घार्थायाविनाशिने। नमो जगत्प्रष्ठिाय व्योमरूपाय वै नमः।।**
**गजासुरमहाकालायान्धकासुरभेदिने। नीललोहितशुक्लाय चण्डमुण्डप्रियाय च।।**
**भक्तिप्रियाय देवाय ज्ञात्रे ज्ञानाव्ययाय च। महेशाय नमस्तुभ्यं महादेव हराय च।।**
**त्रिनेत्राय त्रिवेदाय वेदाङ्गाय नमो नमः। अर्थाय चार्थरूपाय परमार्थाय वै नमः।।**
**विश्वभूपाय विश्वाय विश्वनाथाय वै नमः। शङ्कराय च कालाय कालावयवरूपिणे।।**
**अरूपाय विरूपाय सूक्ष्मसूक्ष्माय वै नमः। श्मशानवासिने भूयो नमस्ते कृत्तिवाससे।।**
**शशाङ्कशेखरायेशायोग्रभूमिशयाय च। दुर्गाय दुर्गपाराय दुर्गावयवसाक्षिणे।।**
**लिङ्गरूपाय लिङ्गाय लिङ्गानां पतये नमः। नमः प्रलयरूपाय प्रणवार्थाय वै नमः।।**
**नमो नमः कारणकारणाय मृत्युञ्जयायात्मभवस्वरूपिणे।**
**श्रीत्र्यम्बकायासितकण्ठशर्व गौरीपते सकलमङ्गलहेतवे नमः।।** (स्क. मा. के. 17/76-90)

अद्‌भुत एवं अनुपम छविवाले भगवान् शंकर के दर्शन किये। वे अपने आधे अङ्‌ग में पार्वती देवी को बिठाकर शोभा पा रहे थे। कर्पूर के समान गौरवर्ण, कमलनयन भगवान् शिव को पार्वती देवी के साथ देखकर राजा चित्ररथ ने उपहासपूर्वक कहा–'शम्भो! संसार में जो विषयी मनुष्य आदि हैं तथा स्त्रियों के वशीभूत रहनेवाले जो दूसरे–दूसरे लोग हैं, वे तथा हम–जैसे अज्ञानी जीव भी जनसमुदाय में संकोचवश स्त्री–सेवन नहीं करते।' यह सुनकर गिरिराजनन्दिनी उमा ने कहा–'अरे दुरात्मन्! रे मूढ़! तूने मेरे साथ बैठे हुए भगवान् शिव का उपहास किया है। अतः इस कर्म का फल तू शीघ्र ही देखेगा। जो समतायुक्त चित्तवाले साधु पुरुषों का उपहास करता है, वह देवता हो या मनुष्य, उसे अधम से भी अधम जानना चाहिये।[1] तू देवता और द्विज दोनों की श्रेणी से बहिष्कृत है। अपने को बड़ा ज्ञानी माननेवाले तुझ अधम को आज मैं दैत्य बनाये देती हूँ।'

पार्वती देवी के इस प्रकार शाप देने पर राजाओं में श्रेष्ठ चित्ररथ सहसा स्वर्ग से नीचे गिर पड़ा। वही इस समय आसुरी योनि में आकर वृत्रासुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। विश्वकर्मा की भारी तपस्या से युक्त होने के कारण इस समय वृत्रासुर अजेय बतलाया जाता है। इसलिये तुम प्रदोषकाल में विधिपूर्वक भगवान् शंकर की पूजा करके देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिये वृत्रासुर का वध करो।

गुरु बृहस्पति की यह बात सुनकर इन्द्र ने कहा–'भगवन्! इस समय मुझे इस प्रदोषव्रत के उद्यापन की विधि बतलाइये।'

बृहस्पतिजी ने कहा–कार्तिक मास आने पर शनिवार के दिन यदि पूरी त्रयोदशी हो तो वह व्रत की सिद्धि के लिये ग्राह्य है। आज वह तिथि स्वतःप्राप्त है। इसमें चाँदी का वृषभ बनवाना चाहिये। उस वृषभ की पीठ पर सुन्दर सिंहासन रखना चाहिये। उस सिंहासन पर उमाकान्त भगवान् शिव की स्थापना करनी चाहिये। भगवान् के तीन नेत्र, पाँच मुख और दस भुजाएँ हों। उनके आधे अङ्‌ग में सती–साध्वी पार्वती का निवास हो। इस प्रकार उमा और महेश्वर की सुवर्णमयी प्रतिमा बनवानी चाहिये। उस प्रतिमा को वृषभ की पीठ पर वस्त्र से ढके हुए ताँबे के पात्र में स्थापित करके रात्रि में श्रद्धा और विधि के साथ जागरण करना चाहिये। पहले यत्नपूर्वक प्रतिमा को पञ्चामृत से स्नान कराना चाहिये। देवराज! मैं पूजा के मन्त्र बतलाता हूँ, सुनो–

(दुग्ध से स्नान कराने का मन्त्र)

**गोक्षीरधाम देवेश गोक्षीरेण मया कृतम्।**
**स्नपनं देवदेवेश गृहाण परमेश्वर॥**

'गाय के दूध में निवास करनेवाले देवेश! देवदेवेश्वर! परमेश्वर! मैंने गाय के दूध से आपको स्नान कराया है, कृपया इसे स्वीकार करें।'

---

1. **साधूनां समचित्तानामुपहासं करोति यः। देवो वाप्यथवा मर्त्यः स विज्ञेयोऽधमाधमः॥**
(स्क. मा. के. 17/108)

(दधि-स्नान-मन्त्र)

**दध्ना चैव महादेव स्नपनं कार्यते मया।**
**गृहाण च मया दत्तं सुप्रसन्नो भवाद्य वै॥**

'महादेवजी! मैं दही से आपको स्नान करवा रहा हूँ। मेरे द्वारा समर्पित यह दधिस्नान आप स्वीकार करें तथा आज मुझपर निश्चय ही अत्यन्त प्रसन्न हों।'

(घृत-स्नान-मन्त्र)

**सर्पिषा च मया देव स्नपनं क्रियतेऽधुना।**
**गृहाण श्रद्धया दत्तं तव प्रीत्यर्थमेव च॥**

'देव! अब मैं घी से आपको स्नान करा रहा हूँ। मेरे द्वारा आपकी प्रसन्नता के लिये श्रद्धापूर्वक समर्पित यह घृतस्नान आप अङ्गीकार करें।'

(मधु-स्नान-मन्त्र)

**इदं मधु मया दत्तं तव तुष्ट्यर्थमेव च।**
**गृहाण त्वं हि देवेश मम शान्तिप्रदो भव॥**

'देवेश्वर! आपके सन्तोष के लिये मेरा दिया हुआ यह मधु आप ग्रहण करें तथा मेरे लिये शान्तिदायक बनें।'

(शर्करा-स्नान-मन्त्र)

**सितया देवदेवेश स्नपनं क्रियते मया।**
**गृहाण श्रद्धया दत्तां सुप्रसन्नो भव प्रभो॥**

'देवदेवेश्वर! मैं मिश्री (या शक्कर) से आपको स्नान करा रहा हूँ। प्रभो! श्रद्धापूर्वक दी हुई इस मिश्री (या शर्करा) को आप स्वीकार करें तथा मुझपर भलीभाँति प्रसन्न हों।'

इस प्रकार पञ्चामृत द्वारा भगवान् वृषध्वज को स्नान कराना चाहिये। तत्पश्चात् बुद्धिमान् पुरुष ताँबे के अर्घ्यपात्र द्वारा अर्घ्य प्रदान करे-

(अर्घ्य-मन्त्र)

**अर्च्योऽसि त्वमुमाकान्त त्वर्घ्येणानेन वै प्रभो।**
**गृहाण त्वं मया दत्तं प्रसन्नो भव शङ्कर॥**

'उमावल्लभ! प्रभो! आप इस अर्घ्य द्वारा पूजन करने योग्य हैं। भगवान् शंकर! मेरे दिये हुए अर्घ्य को आप ग्रहण करें और मुझपर प्रसन्न हों।'

(पाद्य-मन्त्र)

**मया दत्तं तु ते पाद्यं पुष्पगन्धसमन्वितम्।**

**गृहाण देवदेवेश प्रसन्नो वरदो भव।**

'देवदेवेश! मेरे द्वारा आपको समर्पित गन्ध-पुष्पयुक्त यह पाद्य (पाँव पखारने के लिये जल) आप ग्रहण करें तथा प्रसन्न होकर मेरे लिये वरदायक बनें।'

(आसनसमर्पण-मन्त्र)

**विष्टरं विष्टरेणैव मया दत्तं च वै प्रभो।**
**शान्त्यर्थं तव देवेश वरदो भव मे सदा।।**

'प्रभो! मैंने आपके संतोष के लिये कुशनिर्मित आसन समर्पित किया है। देवेश्वर! आप मेरे लिये सदा वरदायक बने रहें।'

(आचमन-मन्त्र)

**आचमनं मया दत्तं तव विश्वेश्वर प्रभो।**
**गृहाण परमेशान तुष्टो भव ममाद्य वै।।**

'प्रभो! विश्वेश्वर! मैंने आपको यह आचमनार्थ जल समर्पित किया है। परमेश्वर! आप इसे ग्रहण करें और आज मुझपर प्रसन्न हों।'

(यज्ञोपवीत-मन्त्र)

**ब्रह्मग्रन्थिसमायुक्तं ब्रह्मकर्मप्रवर्तकम्।**
**यज्ञोपवीतं सौवर्णं मया दत्तं तव प्रभो।।**[1]

'प्रभो! यह सुवर्णरंग का (पीत) यज्ञोपवीत मैंने आपकी सेवा में प्रस्तुत किया है; यह ब्रह्मग्रन्थि से युक्त है तथा ब्रह्मकर्म (वैदिक यज्ञ-यागादि तथा भगवत्प्रीत्यर्थ कर्म) में लगानेवाला है।'

(वस्त्र-मन्त्र)

**एतद् वासो मया दत्तं सोत्तरीयं सुशोभनम्।**
**गृहाण त्वं महादेव ममायुष्यप्रदो भव।।**

'महादेवजी! मैंने यह चादरसहित परम सुन्दर वस्त्र आपको भेंट किया है; आप इसे ग्रहण करें और मुझे आयु प्रदान करें।'

(चन्दन-मन्त्र)

**सुगन्धं चन्दनं देव मया दत्तं तु ते प्रभो।**
**भक्त्या परमया शम्भो सुगन्धं कुरु मां भव।।**

---

1. पाठान्तर इस प्रकार है:-

**यज्ञोपवीतं सौवर्णं मया दत्तं च शङ्कर।**
**गृहाण परया तुष्ट्या तुष्टो भव तु सर्वदा।।**

'देव! शम्भो! मैंने आपको बड़ी भक्ति से सुगन्धित चन्दन समर्पित किया है; सबके जन्मदाता भगवान् शिव! आप मुझे उत्तम गन्ध से युक्त करें।'

(धूप-मन्त्र)

**धूपं विशिष्टं परमं सर्वौषधिविजृम्भितम्।**
**गृहाण परमेशान मम शान्त्यर्थमेव च।।**

'परमेश्वर! सब प्रकार की ओषधियों से सम्पन्न तथा बहुत ही विशिष्ट बनी हुई यह धूप आपकी सेवा में समर्पित है। मेरी शान्ति के लिये आप इसे ग्रहण करें।'

(दीप-मन्त्र)

**दीपं हि परमं शम्भो घृतप्रज्वलितं मया।**
**दत्तं गृहाण देवेश मम ज्ञानप्रदो भव।।**

'शम्भो! मैंने घी से जलाया हुआ यह उत्तम दीप आपकी सेवा में प्रस्तुत किया है। देवेश्वर! आप इसे ग्रहण करें और मेरे लिये ज्ञानदाता बनें।'

(आरती-मन्त्र)

**दीपावलिं मया दत्तां गृहाण परमेश्वर।**
**आरार्तिकप्रदानेन मम तेजःप्रदो भव।।**[1]

'परमेश्वर! मेरी दी हुई यह दीप-माला आप ग्रहण करें, तथा इस आरती उतारने से सन्तुष्ट होकर आप मुझे तेज प्रदान करें।'

इसी प्रकार फल, दीप आदि तथा नैवेद्य और ताम्बूल आदि सामग्रियाँ क्रमशः चढ़ाकर विधिज्ञ पुरुष भगवान् शिव की पूजा करे तथा रात्रि में यत्नपूर्वक जागरण करे। अपने घर में या देवालय में चँदोवा तनाकर अद्भुत सामग्रियों से सजा हुआ एक मण्डप बनावे। उसमें गीत, वाद्य और नृत्य के द्वारा भगवान् सदाशिव की पूजा करे। इन्द्र! प्रदोषव्रत के उद्यापन की यही विधि है। विधिज्ञ पुरुष को चाहिये कि वह अपने सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिये इसी प्रकार से सब कुछ करे।

गुरु बृहस्पतिजी ने जो कुछ बताया, उसके अनुसार इन्द्र ने सब विधि का पालन किया। तदनन्तर उसने युद्ध आरम्भ किया। नमुचि के मारे जाने पर सब देवता हर्ष और उत्साह में भरे हुए थे। उनका दैत्यों के साथ घोर युद्ध हुआ। देवताओं और दैत्यों का संहार करनेवाले उस घोर संग्राम में अत्यन्त भयङ्कर तथा मर्यादा का उल्लङ्घन करनेवाला द्वन्द्वयुद्ध होने लगा। इसी समय पूर्वोक्त प्रकार से भगवान् शंकर की आराधना करके इन्द्र भी युद्ध में लग गये। उन्होंने देवताओं को साथ लेकर वृत्रासुर का पीछा किया। व्योमासुर ने यमराज के साथ तथा तीक्ष्णकोपन ने अग्नि के साथ युद्ध आरम्भ किया। वायु के साथ

1. ये पूजासम्बन्धी मन्त्र स्क. पु. मा. के. अ. 17 में (श्लोक 118 से 132 तक) आये हैं।

धूम और नैर्ऋत के साथ अतिकोपन लड़ने लगा। कुबेर के साथ कूष्माण्ड तथा ईश के साथ दुःसह भिड़ गया। इनके सिवा और भी बहुत से महाबली दैत्य देवताओं के साथ द्वन्द्वयुद्ध करने लगे। उन्होंने गदा, पट्टिश, खड्ग, शक्ति, तोमर, मुद्गर, ऋष्टि, भिन्दिपाल, पास, प्रास तथा मुष्टिक आदि से प्रहार किया। उसी प्रकार देवता भी दधीचि की हड्डियों से बने हुए उत्तम अस्त्र-शस्त्रों द्वारा असुरों को विदीर्ण करने लगे। देवताओ की मार खाकर दैत्य पुनः पराजय को प्राप्त हुए। उन्हें भयभीत देख वृत्रासुर ने समझाया- 'वीरो! युद्ध स्वर्ग का द्वार है, इसका त्याग कदापि नहीं करना चाहिये। जिनकी संग्राम में मृत्यु होती है, वे परम पद को प्राप्त होते हैं। विद्वान् पुरुष जहाँ कहीं भी सम्भव हो संग्राम में मृत्यु की अभिलाषा करते हैं। जो लोग युद्ध छोड़कर भागते हैं, वे निश्चय ही नरक में पड़ते हैं। महापातकी मनुष्य भी यदि गौ, ब्राह्मण, भृत्य, कुटुम्ब तथा स्त्री की रक्षा के लिये हाथ में शस्त्र लेकर युद्ध करें तथा वे शस्त्रों के आघात से घायल हो जायँ अथवा युद्धस्थल में ही प्राण त्याग दें, तो उन्हें निश्चय ही उत्तम लोक की प्राप्ति होती है। वे ज्ञानियों के लिये भी दुर्लभ उत्कृष्ट पद को प्राप्त कर लेते हैं। अतः तुमलोगों को अपने स्वामी के कार्य-साधन में पूर्णतः तत्पर रहकर युद्ध करना चाहिये।'

वृत्र के इस प्रकार समझाने पर असुरों ने उसकी आज्ञा शिरोधार्य की और देवताओं के साथ ऐसा घमासान युद्ध आरम्भ किया, जो सम्पूर्ण लोकों के लिये भयंकर था। इधर मारने की इच्छा से इन्द्र को आते देख वृत्रासुर ठठाकर हँस पड़ा, उसका वह अट्टहास इन्द्र को भी भयभीत कर देनेवाला था। वीर वृत्रासुर बड़ा तेजस्वी था। उस समय वह दैत्यों का अधिपति बना हुआ था। उसके मन में सुरश्रेष्ठ इन्द्र को निगल जाने की इच्छा हुई और वह बहुत बड़ा मुँह फैलाकर इन्द्र की ओर बढ़ा। समीप आने पर उसने ऐरावत हाथी, वज्र और किरीटसहित इन्द्र को सहसा निगल लिया और वह नाचने तथा गर्जना करने लगा। पलक मारते-मारते इन्द्र वृत्रासुर के ग्रास बन गये। वहाँ उपस्थित रहकर यह दुर्घटना देखनेवाले देवताओं में बड़ा हाहाकर मचा। धरती काँप उठी। हजारों उल्कापात होने लगे तथा सम्पूर्ण चराचर जगत् में अन्धकार छा गया। उस समय सब देवता चिन्तामग्न हो ब्रह्माजी के पास गये और वृत्रासुर की सारी करतूत उन्होंने ब्रह्माजी से कह सुनायी। सुनकर लोकपितामह ब्रह्मा ने चित्त को भलीभाँति एकाग्र करके भगवान् शंकर का स्तवन किया। उसी समय आकाशवाणी हुई- 'इन्द्र ने प्रदोषव्रत का अनुष्ठान करते समय कुछ विपरीत कार्य कर डाला है। जो मूर्ख शिवनिर्माल्य, अर्घा, शिवलिङ्ग की छाया तथा देव-मन्दिर का लंघन करते हैं, वे शिव-गणों में प्रधान चण्डेश के द्वारा दण्डनीय हैं; इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। इसलिये लिङ्गपूजनपूर्वक प्रदक्षिणा और नमस्कार करने से अवश्य कल्याण होता है। ऐसी उत्तम बुद्धि रखकर प्रयत्नपूर्वक लिङ्गपूजन करना चाहिये। कनेर, मदार, भटकटइया, धतूर, शतपत्र, अमलतास, पुन्नाग (सँदेसरा), मौलसिरी, नागकेसर, नीलकमल, कदम्ब, आक तथा नाना प्रकार के कमल आदि पुष्प तीनों काल में सदा पवित्र जानने चाहिये। चमेली, बेला, सेवती, श्यामपुष्प, कुटल, कर्णिकार, कुसुम्भ,

लाल कमल - ये पुष्प विशेषत: मध्याह्न काल में शिवलिङ्ग पूजन के लिये श्रेष्ठ बताये गये हैं। कमल के फूल तीनों काल में पवित्र माने गये हैं। रात्रि में केवल कुमुद के फूल विशेष पवित्र बताये गये हैं। इस प्रकार पूजा - भेद को जानकर शिवलिङ्ग का पूजन करना चाहिये। विधिज्ञ पुरुषों को शिवालय में सदा शास्त्रीय विधि का पालन करना चाहिये। शिवलिङ्ग और नन्दिकेश्वर के बीच में होकर अथवा अर्घान्तर की परिक्रमा नहीं करनी चाहिये। यदि कोई करता है तो पाप का भागी होता है। इस इन्द्र ने राजस्वभाव का आश्रय लेकर वैसी ही प्रदक्षिणा (जिसका कि निषेध किया गया है) की है। इसीलिये इसका किया हुआ सब कुछ निष्फल हो गया और यही कारण है कि आज वृत्रासुर ने इन्द्र को अपना ग्रास बना लिया। देवताओं! अब तुम्हीं लोग महारुद्र - विधान के अनुसार शिवलिङ्ग पूजन करो, जिससे इन्द्र शीघ्र ही छुटकारा पा सकें।'

आकाशवाणी के कथनानुसार देवताओं ने प्रतिदिन भगवान् शंकर का पूजन और दशांश हवन आरम्भ किया। तब देवराज इन्द्र भगवान् शिव के प्रसाद से सहसा वृत्रासुर का पेट फाड़कर बाहर निकल आये। हाथी, वज्र, किरीट और कुण्डलसहित परम शोभासम्पन्न महातेजस्वी इन्द्र को देखकर सब देवता, गन्धर्व, अप्सरा, यक्ष तथा ऋषि - मुनि बड़े प्रसन्न हुए। देवताओं की दुन्दुभियाँ बज उठीं। इस प्रकार वृत्रासुरका वध करके इन्द्र ने विजय प्राप्त की और वे शचीनाथ निर्भय होकर इन्द्रासन पर विराजमान हुए।

(संक्षिप्त स्कन्दपुराणांक - महेश्वरखण्ड - केदारखण्ड - अ. 17)

## (3) व्रत के उद्यापन की सामान्य विधि

उद्यापन करने से एक दिन पूर्व गणेश - पूजन करने के बाद घर में अथवा किसी देवालय में बैठकर नृत्य - गीतादि द्वारा रात भर जागरण करें। दूसरे दिन प्रात: स्नानादिकार्य से निवृत्त होकर रंगीन वस्त्रों से मंडप बनावें। उस मण्डप में शिव - पार्वती की प्रतिमा स्थापित करके विधिवत् पूजन करें। तदनन्तर शिव - पार्वती के उद्देश्य से अन्य पदार्थों के साथ खीर से अग्नि में हवन करना चाहिये। हवन करते समय '**ॐ उमासहित शिवायै नमः**' मन्त्र से खीर की 108 बार आहुति देनी चाहिये। इसी प्रकार '**ॐ नमः शिवाय**' मन्त्र से शंकरजी के निमित्त आहुति प्रदान करें। हवन के अन्त में पत्नीवान् आचार्य को वस्त्र, अलंकार तथा गाय दान में देवें। ऐसा करने के बाद ब्राह्मणों को भोजन - दक्षिणा से सन्तुष्ट करना चाहिये। 'व्रत पूर्ण हो' ऐसा वाक्य ब्राह्मणों द्वारा कहलवाना चाहिये। तदनन्तर बन्धु - बान्धवों को भोजन करवाना चाहिये।

(उपर्युक्त लेख मूलत: गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित 'व्रतपरिचय' एवं कल्याण के 'संक्षिप्त स्कंदपुराणांक' पर आधारित है।)

❁❁❁❁❁❁